International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 80-81

हिन्दी कहानी पर भूमण्डीलकरण का प्रभाव

नीरजा सिंह

हिन्दी विभाग, राजस्थान वि.वि., जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद भूमण्डलीकरण जैसी परिकल्पना सामनें आती है। आज भूमण्डलीकरण का प्रभाव मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा सकता है। भारत में खास तौर पर दशवें दशक के आरम्भ से ही उदारीकरण, भूमण्डीलकरण, पूंजीवाद, संस्कृति, नवनिवेशीकरण, नवसाम्राज्यवाद आदि का उदय होता है। सार्वजनिक संस्थाओं, सरकारी कम्पनियों पर सरकार का वर्चस्व हटता हुआ दिखाई देता है। भारत अपना दरवाजा मुक्त बाजार के रूप में खोल देता है, ताकि अन्य देश यहॉ आकर अपना बाजार स्थापित कर सकें। इस तरह भारत एक सब्जी मण्डी के रूप में तब्दील होना शुरू हो जाता है। विश्व के कई देश अपना कम्पनियों को भारत में स्थापित कर देते हैं, उदाहरण के तौर पर भारत और फ्रांस के सहयोग से 'सोनालिका ट्रेक्टर' कम्पनी की स्थापना को दखा जा सकता है। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय पूंजी का ग्लोबल हो जाता है। कमल नयन काबरा के अनुसार 'वास्तव में भूण्डलीकरण से मंशा सारी दुनिया को एक मंडी में तब्दील कर देना है, एक ऐसी दुनिया जो मंडी मात्र ही नहीं है, अपितु उसका संचालन भी मंडी की आंतरिक ताकतों द्वारा सामाजिक, वैश्विक जीवन के हर अन्य पक्ष को गौण और मण्डी का पिछलग्गू बनाकर किया जाता है।

भूमण्डीकरण का सबसे बड़ा दुष्परिणाम है, ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरण पर मंडलकार खतरा उपभोक्तावादी संस्कृति का बढ़ता कहर। इन कारको का भारतीय जनमानस पर बहुत ही तीव्र गति से प्रभाव पड़ रहा है। भूमण्डीलकरण से एक तरफ कुछ विकास तो हुआ है, वहीं दूसरी तरफ विनाश भी तेजी से हो रहा है। जनजीवन संकट ग्रस्त होता चला जा रहा है। ''भूमण्डलीकरण ने दुनियां को साफ साफ दो हिस्सों में बांट दिया है। भूमण्डलीकरण का किस्सा भी केवल आज का नहीं, वास्तव में पुराना है। उसका पिछला दौर उपनिवेश का था। तब तक यह बटवारा नजर आता था और प्रतिरोध संभव था। किया भी गया था। उस दौर में इसे हमनें आजादी की लड़ाई कहा था। अब हम इसे विकास यात्रा कह रहे हैं, अब इसमें स्वेच्छा और चुनाव का भ्रम है, अब वह हमारे आजाद समर्पण का पर्याय है। एक के पास विकास है। दूसरे के हिस्से में विस्थापन और विनाश। कहते हैं यह विकास की कीमत है, चुकानी होगी।''

भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप भारतीय जनजीवन में राजीनतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में जो बदलाव आया है, उसमें हिन्दी साहित्य अछूता नहीं रहा है। खास तौर से कहानी की बात करें तो समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से मनुष्य जीवन पर पड़ रहे भूमण्डलीकरण के प्रभाव को रेखांकित करने का प्रयास किया है। इन कहानीकारों में कैलाश बनवासी, राकेश कुमार सिंह, प्रियदर्शन, नीलाक्षी सिंह, मो आरिफ, प्रभात रंजन, कुणाल सिंह, चन्दन पाण्डेय, वन्दना राग, अरूण कुमार असफल, गीत चतुर्वेदी, अनिल यादव, कैलाश वानखेड़े, जय श्री रॉय, अल्पना मिश्र, मनोज पाण्डेय आदि चर्चित है।

कैलाश बनवासी की कहानी 'बाजार में रामधन' इस समस्या को उजागर करती है कि समाज में कृषक की स्थिति दयनीय हो गयी है। कहानी सिर्फ रामधन जैसे किसानों की नहीं है, बल्कि भारत के उन समस्त किसानों की है, जो पूंजीवादी व्यवस्था में दम–तोड़ते नजर आते हैं। राकेश कुमार सिंह की 'पांच हजार का तोता' शीर्षक कहानी उस मानव की व्यथा है, जो रोटी, कपड़ा और मकान के लिए संघर्ष करता हुआ दिखाई पड़ता है, कारण इस बाजारवादी संस्कृति में पूंजी महत्वपूर्ण हो गई है, परिश्रम का कोई मोल नहीं है। पूंजीवाद वर्ग और धनवान होता चला जा रहा है। वहीं गरीब को गरीबी साल रही है। प्रियदर्शन की कहानी 'बाएं हाथ का खेल' में झुग्गियों में जीवन बसर करने वालों पर हो रहे अत्याचार को चित्रित किया गया है। पूंजीपति वर्ग अपने लाभ के लिए इनका जीवन नष्ट करने पर तुले हुए है। कहानी की केन्द्रीय विशेषता है। प्रियदर्शन की एक और कहानी है, 'पेइंग गेस्ट'। इस कहानी में छोटे शहर और बड़े शहर में जीवन यापना के अंतर को उकेरा गया है। बाजारवाद आज शहर में ही नही गांव में किस तरह अपना शिंकजा कसता चला जा रहा है। उसका चित्रण मिलता है। देश के जिस कोने में पानी और बिजली की व्यवस्था नहीं हो पाई है, वहां भी पेप्सी–कोला, मोबाइल की पहुॅच हो चुकी है।

नीलाक्षी सिंह की चर्चित कहानी है – 'टेक बे त टेक न तो गो' लेखिका ने इस कहानी का समय उन्नीस सौ चौरानवे बताया है, यह वहीं समय है' जब शीत युद्ध का खात्मा और भूमण्डलीकरण से सारी दुनियां बदल रही थी। इस कहानी में इस बात का जिक्र किया गया है कि मनुष्य विज्ञापन का सहारा लेकर एक दूसरे को नष्ट करते हुए अपना बाजार स्थापित करना चाहता है। कहानी का प्रसंग है – ''मॉ क्या तुम बाजार में इस तरह टिके पाओगी' बड़ा बेटा टिंकू, उम्र सोलह साल, दुलारी ने चेहरा उठाया, पहली बार बदले जमाने के इस नंगे जेनुइन और आधुनिक किस्म के प्रश्न से उसका साबका पड़ा था।'' हे भगवान! और इतना बुद्धिगर सवाले उठाने वाला कौन ... उसी का बेटा। इतनी अकल...। कहानी का पात्र चिंकू बाजार में टिकने का फार्मूला देता है, कुछ लिखा था – 'दुलारी जलेबी सेण्टर' नीचे भी कुछ लिखा था, ये घोषणा थी, फिर घोषणा, वहां लिखा था – प्रति जलेबी मूल्य एक रूपया, पचास पैसे, चार जलेबियों की खरीद पर दो कचोरी ओर एक कप चाय मुफ्त!' मुफ्त! क्या चक्कर? लोग खलबला गए।''

मो. आरिफ की कहानी 'फुर्सत' इस बात की ओर संकेत करती है कि मनुष्य अपनी समस्याओं को दूर करने के लिए जो उपक्रम जिन्दगी में अपनाता है, उससे जीवन आसान नहीं बल्कि कठिन होता चला जा रहा है। आज मनुष्य अपनी जिजीविषा के लिए कुछ भी करने को विवश है। कुणाल सिंह की कहानी 'शोकगीत' में पूंजीवादी व्यवस्था में युवा मानस किस तरह से त्रस्त है, उसको उद्घाटित किया गया है। आज युवा वर्ग क्षमतावान, स्वप्नदर्शी तो है, लेकिन उसके पास पूंजी नहीं है, कहानी का प्रसंग है 'बिल्कुल ठीक फरमाया आपने, पैसा होना चाहिए, आजकल तो रूपये के सारे खेल हैं जनाब, गरीबों के लिए कोई ठौर नहीं। बाजारवाद ने युवा

मानस को झकझोर कर रख दिया है, बाजार में लुभावनी चीज ही आ गई है, जिसे प्रत्येक मनुष्य प्राप्त करना चाहता है, उसके लिए पूंजी होनी चाहिये, नौकरी होनी चाहिये। कुणाल सिंह ने इस कहानी मे मनुष्य के त्रस्त जीवन को इस तरह रेखांकित किया है – 'आज यह ग्यारहवां दिन है, बिना कोई ठोस वजह बताए एक साथ तीन महीने का वेतन देकर नौकरी से हमारी छुट्टी कर दी गई थी। तब से हम खाली हैं, हमारे साथ बीस लोग और थे बाकी के लोग फिलहाल क्या कर रहे हैं, हमें पता नहीं। मैं और मेरे दोस्त पहले की तरह ही घर से ऐन साढ़े नौ बजे निकलकर किसी तयशुदा जगह पर मिलते हैं और तब शुरू होती है हमारी अंतहीन भटकन।''

चन्दन पाण्ड्ेय की कहानी 'रेखाचित्र में धोखे की भूमिका' भूमण्डलीकरण के प्रभाव से गांव में हो रही तब्दीली को उद्घाटित करती है। कहानी में एक गांव है, जो भारत के तमाम गांवों की तरह भारत के आजादी के समय किये गये वादों के न पूरा होने से टूट रहा है। गांव में मनुष्य अपनी जिजीविषा के लिए बम्बई, कोलकत्ता आदि शहरों में जाकर मजदूरी करने के लिए विवश है। एक तरह से देखा जाए तो आज गांव भूमण्डलीकरण के प्रभाव से वीरान होने को अभिशप्त है। 'पांच का सिक्का' अरूण कुमार असफल की चर्चित कहानी है। कहानी में बाजारवादी संस्कृति के कारण गांव में कुपोषण के शिकार हो रहे बच्चे और गांव में हो रहे बदलाव को रेखांकित किया गया है। ''उजड़ती खेती, बेराजगार और कर्जदान किसान, एक तरफ अनाजों से भरे भण्डार और वहीं दूसरी तरफ भुखमरी, रोजगार की तलाश में रोज गांवों से शहरों की तरफ पलायन, वहॉ बढ़ती हुई झुग्गियों की संख्या और उसमें गुजरता हुआ नारकीय जीवन''[1] इस तरह से अनगिनत मुद्दे आज के समकालीन यथार्थ का हिस्सा हैं। और इस वर्तमान यथार्थ के बहुआयामी पक्षों को विसंगतियों और विडम्बनाओं को अरूण अपनी इस कहानी में पूरी तरह समेटते हैं।

जय श्री रॉय की कहानी 'खारा पानी' प्रमुख रूप से गोवा के मछुआरा बस्ती पर आधारित है। इस बस्ती को विकास (सरकार) के हवाले कर दिया गया है, लेकिन बस्ती वालों के लिए इसका मतलब विस्थापन या विनाश। कहानी का प्रसंग हे – 'रघु के तेवर सबसे उग्र थे, जवान खून था, पूरे उबाल पर – कोई कहेगा दद्दा ये हमारा वही गोवा है? कभी यहॉ हरियाली, समंदर और चारों तरफ खुशहाली थी। और अब...? सिर्फ मरती हुई मछलियॉ और कंगाल होता दरिया...। इस कहानी में विकास के नाम पर हो रहे राजनीतिक छलावे को भी उद्धारित किया गया है– 'गुस्से में आई भीड ने राज्य सभा भवन के सामनें प्रदर्शन किया। बहुत हंगामा हुआ। पुलिस की गोली में एक की जान चली गई। राजनीतिक पार्टियॉ झूठी हमदर्दी का मुखौटा ओढ़े अपना अपना झंडा, बैनर लेकर हाजिर हो गयी। खूब रोटी सेकी गई गरीब की चिता पर। मगर हुआ कुछ भी नहीं।''[2] कहानी में लेखिका ने पर्यावरण की समस्या की ओर संकेत किया है – ''खोखली जमीन पर खड़ा है ये हवा महल, एक दिन गिरेगा, न जाने किस किस पर, रूपा उसे समझाती है और खुद छिपकर रोती है– देवा, कैसी दुनिया में आयेगा हमारा बच्चा, क्या साफ हवा, पानी और दरिया सिर्फ उनके किस्से कहानियों में ही रह जायेंगे।''[3]

स्पष्ट है कि भूमण्डलीकरण के उपरान्त भारतीय जनमानस में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्रों में जो बदलावा आया, उसको समकालीन कहानीकारों ने बेजोड़ ढंग से चित्रित किया है। आज हिंदी कहानी मनुष्य की पीड़ा से मुखातिब करती चलती है, पूंजी को प्राप्त करने के चक्कर में मनुष्य को मनुष्य खाता चला जा रहा है। भूमण्डलीकरण से एक तरफ विकास तो दूसरी तरफ विनाश भी होता चला जा रहा है। गांव, शहर, महानगर, आदि में तेजी से बदलाव हो रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. अरूण कुमार, असफल, पांच का सिक्का, अंतिका प्रकाशन नई दिल्ली, 2011, पृ.सं. 16
2. जयश्री रॉय, खारा पानी, हिन्दी समय डॉट काम, 2013
3. जय श्री रॉय, खारा पानी, हिन्दी समय डॉट काम, 2013